RNI NO. : 1276610
ISSN NO : 2456-2645
Impact Factor-3.267

Volume - 04
Number - 08
January - 2018

ACADEMIC SOCIAL RESEARCH

(An Inernational Research Journal)

ACADEMIC SOCIAL RESEARCH

ASR

TABLE OF CONTENTS

S.N.	NAME OF AUTHOR AND TITLE	PAGE NO.
1	**Dr. Smt. Rama Gupta** The Concept Of Social Accountability In Higher Education	1
2	**Mrs. M.H. Martin** An Investigation Of Teachers' Attitudes Towards	8
3	**Anita Jhariya** A Comparative Study Of Teacher Education	14
4	**K.L. Barmaiya** Competence In The Education Process:Research	19
5	**Dr. K.P. Gupata** A Framework Of Sustainable Management	30
6	**Dr. A.S. Singh** Modes Of Thinking And Learning Approaches	38
7	**Dr. Rajesh Kumar Chourasiya** Impact Of Technology Trends In Education	52
8	**Dr. Satish Kumar Sanodiya** An Analysis Of 'Organizational Commitment' Among College Teachers: Research	56
9	**Dr. B.J. Jhariya** An Expatriate In The Changing Paradigm Of Globalization Research	62
10	**Dr. Dinesh Chahal** An Exploratory Study Of Challenges Faced By The Parents Of Marginalized Children To Access The Educational Rights	69
11	**Dr. Manjoo Dubey** Role Of Modern Technology And Science In Progressive Indian Education	75
12	**Anita Jhariya** Role Of Inclusive Education In Progressive Society And Education	78
13	**डॉ.एस.पी घूमकेती** समकालीन हिन्दी काव्य में वर्णित साहित्यक रचना	82
14	**डॉ. रियाज अहमद मंसूरी** शिक्षा अधिकार अधिनियम– 2009 की व्यावहारिक प्रासंगिकता	87

15	डॉ. जे.एल. बरगैया प्रगतिशील समाज और शिक्षा में समावेशी शिक्षा की भूमिका	93
16	डॉ. आर.एस. घुर्वे विद्यार्थियों के मानसिक तनाव के कारण एवं रोकथाम के उपाय	97
17	डॉ. आर.के गोटिया वंचित वर्ग व शैक्षिक अवसरों की उपलब्धता	102
18	डॉ. पुष्पलता कुशवाहा वर्तमान परिदृश्य में शान्ति शिक्षा की आवश्यकता	106
19	डॉ. श्रीकांत श्रीवास्तव प्रगतिशील भारत में शिक्षा का बदलता परिदृश्य	113
20	डॉ. इंदु मिश्रा प्रगतिशील भारतीय समाज में कौशल-विकास के लिए शिक्षा की भूमिका	118

समकालीन हिन्दी काव्य में वर्णित साहित्यक रचना

डॉ एस.पी धूमकेती
हिन्दी विभाग
रानी दुर्गावती शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय मडला (म.प्र.)

सारांश

समकालीन काव्य सन् 1960 ई0 के आसपास से अद्यावधि तक रचित वह काव्य है जो वस्तु और शिल्प की दृष्टि से अपने पूर्ववर्ती काव्यान्दोलनों से भिन्न भाव बोध का है। नयी कविता तथा नवगीत के विविध काव्यान्दोलन इसके अन्तर्गत समाविष्ट है। समकालीन काव्य मे कविता के सभी रूप विद्यमान हैं यथा-समकालीन कविता, नवगीत, समकालीन गीत, हिन्दी गजल, लम्बी कविता या प्रबन्ध कविता आदि किन्तु शर्त यह है कि समकालीन काव्य का काव्य अपने समकालीन परिवेश के यथार्थ चित्रण पर आधारित हो तथा समकालीन मूल्यबोध से अनुप्राणित हो।

मुख्य शब्द : कविता के रूप, परिवेश, मूल्यबोध, युगीन समाज।

प्रस्तावना

समकालीन हिन्दी काव्य में समकालीन समाज, मानवीय स्थितियों एवं सम्बन्धो का विस्तृत विवेचन हुआ है। यह अपने समय का दस्तावेज है तथा इसमें जिस मनुष्य और जिन परिस्थितियो का चित्रण हुआ है वे हमारे आसपास की है। समकालीन काव्य भाव, विचार, भाषा एवं शिल्प की दृष्टि से परम्परागत काव्य से भिन्न एवं नवीन मूल्य बोध का काव्य है। विगत चालीस वर्षों की कविता में जीवन मूल्यों के बदलते सन्दर्भों को बड़ी ईमानदारी से अनुभव किया गया है।

समकालीन काव्य मे रचनाकारो ने जिस युगीन समाज का वर्णन किया है उसमे नगर जीवन, ग्राम्य जीवन, परिवार का स्वरूप, पारिवारिक संस्कृति एवं मान्यतायें, सामाजिक संगठन, आचार-विचार एव रीति-रिवाज आदि प्रमुख है। समकालीन समाज के शहरी जीवन से कवि अधिक प्रभावित हुआ है। अतः नगरीय जीवन की संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर कवियो ने लेखनी चलाई है।

समकालीन समाज मे शहरीकरण की प्रवृत्ति को बहुत बढ़ावा मिला। रोजगार की तलाश मे ग्रामीण युवा शहरों की ओर भागने लगे, फलतः शहरो का आकार तेजी से फैलने लगा। नगरो एवं शहरों की बस्तियाँ बेतरतीब फैलने लगी, जिसका कारण था शहरी नियोजन का अभाव। "जिस अनुपात में शहरो की आबादी बढ़ रही है उस अनुपात में जन सुविधायें प्राप्त न हो सकी। आम जनता जो स्वप्न लेकर शहरों मे आई थी वे धीरे-धीरे खण्डित होने लगे। दूषित वातावरण, निम्न जीवन स्तर, रोजगार का अस्थाईपन, जन सुविधाओं का अभाव और अन्य नागरिक सुविधाओं के अभाव मे जीवन पशुवत हो गया। आर्थिक मजबूरियों ने

परिवार की इकाई को खण्डित कर दिया और संयुक्त परिवार तेजी से बिखरने लगे। पारिवारिक सम्बन्धो मे कटुता भर गयी और व्यक्ति अकेला पड़ने लगा।"

समकालीन रचनाकारो ने समाज की इन स्थितियो का वर्णन बड़ी संवेदना के साथ किया है। हिन्दी गजल के पुरोधा दुष्यन्त कुमार इस सम्बन्ध मे बड़ी संजीदगी के साथ लिखते है-

"कहाँ तो तय था चिरागां हरेक घर के लिए
कहाँ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए
यहां दरख्तों के साये में धूप लगती है
चलो यहां से चलें और उम्र भर के लिए।"

नगरो और महानगरों की अनेक समस्याओ का प्रत्यक्ष सम्बन्ध जनसंख्या विस्फोट से है। भारत की जनसंख्या जो आजादी के समय लगभग सैंतीस करोड़ थी आज प्रायः सवा अरब है। इस बढ़ती हुई आबादी के फलस्वरूप आजीविका की खोज मे जनसमूह गाँवो से नगरो की ओर अबाध गति से चले जा रहे है और नगर मनुष्यो से भर कर उमड़ रहे है।

शिक्षा, चिकित्सा के प्रसार और अधिक सुविधापूर्ण जीवन की खोज मे भी गांव की युवा पीढ़ी शहरो की ओर आकर्षित हो रही है। गाँवो मे खेती के अनिश्चित परिणाम बाढ़ और सूखे की विकट लीला तथा कभी उपलवृष्टि आदि के कारण ग्रामवासी गावों मे न रहकर नगरों, महानगरो मे रहना पसन्द करते है। शहरी जीवन की चकाचौंध, मनोरंजन के अनेकानेक साधन (सिनेमा आदि), शिक्षा, स्वास्थ्य तथा सबसे महत्वपूर्ण बात आर्थिक सुरक्षा (डकैतो आदि से) के कारण भी अधिकांश सम्पन्न एवं मध्य वर्ग के किसान शहरो में मकान बनवाकर रहने लगे है। सन् 1961 ई0 मे जहाँ शहर मे रहने वालो की संख्या लगभग 8 करोड़ थी वही सन् 1975 ई0 मे 13.5 करोड़ के आसपास पहुँच गई। सन् 2015 ई0 मे यह संख्या लगभग पैंतालीस करोड़ तक हो गई है।

नगरों के आसपास सीमित भूमि की समस्या तो है ही, उचित आवास, भोजन, शिक्षा, व्यवसाय, परिवहन, स्वच्छ वातावरण और सुरक्षा का अभाव भी कम नही है। नगरो मे ऊँची-ऊँची अट्टालिकाएं खड़ी हो गई है पर झोपड़पट्टों की भी कमी नही है।

आलीशान भवनों मे आधुनिक सभ्यता और विज्ञान की उपलब्धियों से अत्यन्त आकर्षक जीवन के साथ ही दूषित बस्तियो के वातावरण की सड़ांध और अभाव की मार से दिन-दिन दुर्बल होता जीवन भी बढ़ता गया। एक ओर महानगरीय जीवन अमीर वर्ग के लिए सुख-सुविधा पूर्ण या विलासितापूर्ण अवश्य हुआ है किन्तु दूसरी ओर महानगरीय परिवेश भावी पीढ़ियों के लिए आतंक भी उत्पन्न कर रहा है। आदमी की जान की कीमत घट गई है। मनुष्य पूर्णतः यांत्रिक हो गया है तथा औद्योगीकरण ने प्रतिदिन लाखो टन कार्बन बरसा कर प्राणवायु को अशुद्ध कर दिया है।

आज स्थिति यह है कि कोलकाता जैसे शहर मे वायु मण्डल मे प्रतिदिन चार सौ टन धूल के कण और लगभग एक सौ पचास टन सल्फर डाई अक्साइड एवं नाइट्रोजन का मिश्रण होता है। कानपुर जैसे शहर मे प्रतिदिन गंगा मे साठ लाख गैलन दूषित जल का प्रवेश हो रहा है।

समकालीन काव्य में नगरो के विलासितापूर्ण जीवन, उच्च वर्ग के मध्य

UGC Approved
ISSN: 2456-2845
IMPACT FACTOR: 3.267

रहन–सहन के वर्णनों के साथ ही साथ शहरी संस्कृति के विसंगतियों के चित्रण भी खूब हुए हैं। शहरी जीवन की जटिलता और चारों ओर बढ़ते भय को रेखांकित करते हुए अशोक वाजपेयी लिखते है–

महीनों बाद लौट कर आता हूँ अपने शहर
और खुदी हुई सड़कें देखकर
शहर के पार चिल्लाता हूँ – मौत
लंगड़ाती हुई एक लड़की
हाथ में पुस्तक और कापियाँ दबाये
धीरे–धीरे लौटती है अपने घर की ओर
ऊँची इमारतों और भरांते टैम्पो के बीच
वह निरन्तर चलती रहती है।[5]

इस प्रकार शहरी जीवन तनावों, घिरावों का जीवन है, चारो ओर मौत का भय है। कहीं भी व्यक्ति सुरक्षित नही है। चारो तरफ शोर शराबा है जिससे व्यक्ति पूरी तरह मानसिक विश्राम नही कर पाता है। शहरों में व्यक्ति इधर–उधर दौड़–धूप करते रहते है ऐसे में मित्र, भाई–चारा, सहयोग और सदभाव जैसे मूल्य बिखरते जा रहे हैं। नवगीत के सशक्त हस्ताक्षर विनोद श्रीवास्तव अपने इस गीत मे शहर की एक बानगी हमारे सामने रखते है–

नकाबें पहनते हैं दिन
कि लगता रात पसरी है
जिसे सब स्वर्ग कहते हैं
न जाने कौन नगरी है
गली के मोड़ पर
ठहरे
गली के बीच से
गुजरे
कहीं भी तो शहर की बानगी
हमको नहीं मिलती।[6]

समकालीन कविता के सशक्त कवि लीलाधर जगूड़ी को अब शहर सभ्यता और संस्कृति के केन्द्र नही लगते बल्कि आदमी और जानवर की भीड़ से भरे हुए लगते है। नगर मे उन्हें आदमी की शक्ल मे जानवर अधिक नजर आये है। संवेदना से रहित समाज के सुख, दुःख से दूर ऐसे व्यक्ति जो आदमी और पशु के सह–अस्तित्व है।

इस तरह मत भागो
कहीं कोई नौकरी पकड़ो
विनाश की बहुत बड़ी पहुंच है
तुम इन्तजार करोगे एक दिन
आदमी जैसी शक्ल के लिए तरसोगे।[7]

शहर के ऐश्वर्यपूर्ण जीवन की चकाचौंध से भी कवि वाकिफ है और यह आकर्षण उसे उलझन और षडयंत्र से भरा हुआ लगता है।

और हां, वह जंगल
जिसके एक–एक पौधे ने दरवाजा खोला था
अब बेहद उलझा हुआ षडयंत्रपूर्ण
बनिये की लिखावट की तरह बेतरतीब
घटना और सांकेतिक हो गया है।[8]

मनुष्य का अस्तित्व शहर की भीड़ मे खो गया है वह स्वयं भीड़ का एक अंग बन गया है जहाँ घर के नाम पर एक–एक कमरे मे एक–एक दर्जन व्यक्तियों के परिवार रह रहे है, यहीं शहर के पार्क, मन्दिर तथा अन्य सार्वजनिक स्थल भीड़ से अटे पड़े है।

UGC Approved
ISSN: 2456-2845
IMPACT FACTOR: 3.267

फिर भी सब जगह के लिए छटपटाते हैं
बेचारे प्रेमी–युगल
इण्डिया गेट पर उघड़ने को मजबूर हैं
सड़क पर नहाते मजदूर हैं
सीढ़ियों में खोमचे लगते हैं
फुटपाथ पर रसोई घर है।[7]

शहरी जीवन मे स्वार्थपरता तथा सकुचित मनोवृत्ति का बोलबाला है, ईमानदारी का अभाव दिखाई देता है। मनुष्य सुविधाभोगी होता जा रहा है। इस सुविधाभोग की प्रवृत्ति ने आदमी को आत्मकेन्द्रित बना दिया है। नवगीत के वरिष्ठ कवि माहेश्वर तिवारी लिखते है–

शहर हो गये
सारे गुलमुहर, अमलतास
भीड़ महानगर हो गये
घर के भीतर की सब आवाजें
एक समाचार हो गई
धूप में निकल
हम पढ़ने लगे
सड़के अखबार हो गई
मन के सन्तुलन
इधर–उधर हो गये।[8]

एक गजल मे भी वे कुछ यूं बयां करते है–

अजनबी सा शहर है हमारे लिये
आग का एक घर है हमारे लिये।[9]

नगरों में रहने वाला व्यक्ति वर्षों से रहता हुआ भी अपने पड़ोसी तक को नही जानता। एक ही अपार्टमेंट में रहने वाले लोग अपने ऊपर या नीचे रहने वाले पड़ोसी से वर्षों तक नही मिल पाते। अधिक अर्जन करने के चक्कर मे व्यक्ति मशीन बन गया है। उसके पास अपने परिवार के लिए भी समय नही है, बच्चे रविवार या
अवकाश के दिनों मे ही अपने पिता का चेहरा देख पाते है। जीवन की इस भागदौड़ और आपाधापी मे जब परिवार या रिश्तेदारों के प्रति हमारी संवेदनाएं नही रह गयी है तो प्रकृति और पशु–पक्षियों के प्रति क्या हो सकती है। डॉ० राकेश शुक्ल अपनी गजल मे कहते है–

युग हुआ चन्दा न देखा और न तारे
आसमां मे धूल, धुआं, धुन्ध छाई है।
घोसलें तो दूर चिड़ियां पर न मारेगी
जालियां मजबूत घर में अब लगाई है।[10]

नगरीय समाज मे ऐसे लोगों का आधिपत्य है जिनकी सकुचित मनोवृत्ति ने सम्पूर्ण जन–जीवन को विषाक्त कर रखा है। व्यक्ति स्वार्थपरता, छल छद्म से भरा हुआ है। उसकी वाणी में मिठास है किन्तु ह्रदय मे जहर भरा हुआ है। भारत भूषण अग्रवाल इस बात को कविता मे कुछ यूं ही व्यक्त करते हैं–

इस महानगर में जहाँ भी जाता हूँ
कुर्सी पर एक सांप को
कुण्डली मारे बैठा पाता हूँ
पार्कों की घास पर इन्हें
लहराते देखता हूँ
दफ्तरों और रेस्तराओं में
इनकी फुफकारें उठती हैं।[11]

समकालीन हिन्दी काव्य मे वर्णित समाज एवं उनकी समान्य विशेषताओ मे नगरो के

जीवन का सशक्त वर्णन हुआ है। नगर चेतना ने कवि के जीवन को बहुत प्रभावित किया है। अधिकांश समकालीन कवि नगरीय, महानगरीय समाज मे रहते है इसलिए

उनका इस जीवन का अपना अनुभव है। उन्होंने नगर की भीड, अभाव, आतंक और वैषम्य को स्वय झेला है फलतः उनके चित्रण में स्वानुभूति गहराई है और उसका तीखापन भी है।

दुष्यन्त कुमार अपनी महानगरीय अनुभूतियो को इन शब्दो मे व्यक्त करते हैं–

तुम्हारे शहर में ये शोर सुन–सुन कर तो लगता है
कि इंसानों के जंगल में कहीं हांका हुआ होगा।
यहाँ तो सिर्फ गूंगे और बहरे लोग बसते हैं
खुदा जाने यहाँ पर किस तरह जलसा हुआ होगा।

इस शहर में वो कोई बारात हो या वारदात
अब किसी भी बात पर खुलती नही है खिड़कियाँ।[12]

इस प्रकार समकालीन काव्य मे समकालीन नगरीय जीवन के अनेक चित्र भरे पड़े है जिनमे मानवीय स्थितियो और सम्वेदनो का विस्तृत विवेचन हुआ है। महानगरीय जनजीवन को प्रत्येक कोण से इन रचनाकारो मे देखा है तथा झुग्गी झोपडियों के अन्दर की स्थितियो से लेकर राजमहल के अट्टहास तक का वर्णन समकालीन कवियो ने किया है।

संदर्भ सूची

1.डॉ0 महावीर वत्स, साठोत्तरी कविता मे सांस्कृतिक चेतना, पृ0 37
2. दुष्यन्त कुमार, साये मे धूप, पृ0 13
3. अशोक वाजपेयी, शहर अब भी सम्भावना है, पृ0 65
4. विनोद श्रीवास्तव, भीड मे बासुरी, पृ0 14
5. लीलाधर जगूडी, नाटक जारी है, पृ0 15
6. लीलाधर जगूडी, नाटक जारी है, पृ0 18
7. भारत भूषण अग्रवाल, एक उठा हुआ हाथ, पृ0 20
8. माहेश्वर तिवारी, हर सिंगार कोई तो हो, पृ0 26
9. माहेश्वर तिवारी, हर सिंगार कोई तो हो, पृ0 66
10. डॉ0 राकेश शुक्ल, जलता रहे दिया, पृ0 96
11. भारत भूषण अग्रवाल, एक उठा हुआ हाथ, पृ0 21
12. दुष्यन्त कुमार, साये मे धूप, पृ0 18

Editorial BOARD

1. **Dr Arvind Pandey**, Department Of Physics B.N.D College Kanpur
2. **Rajesh Nigam**, Associate Professor Department Of Economics D.B.S College Kanpur
3. **Ashok Mishra**, Department Of Chemistry D.B.S College Kanpur
4. **Anuja Shukla**, Hod Department Of History Dr Haribansh Rai Bachhan Dg Unnao
5. **Santosh Kumar Tripathi**, Department Of Chemistry V.S.S.D PG College Nawabganj Kanpur
6. **Dr .Pralial Pratap Singh**, Department Of Commerce R.S.G.S Pukhrayan Kanpur Dehat
7. **Dr Swami Nath**, Hod Department Of Mechanical Engg Rajkiya Polytechnic Kanpur
8. **Dr Manish Tripathi**, Associate Professor Department Of Library Science D.S.N Pg College Unnao
9. **Dr Shivshankar Singh Kushwaha**, Department Of Chemistry P.P.N (PG) College Kanpur

BOTANY DEPARTMENT

Dr. Sunil Singh, DAV College,Kanpur u.p. India
Dr. Piyush Mishra, DAV College Kanpur u.p. India
Dr. A. P. Saxena, DAV College Kanpur u.p. India

CHEMISTRY DEPARTMENT

Dr. Janeshwar Mishr,Saraswati Mahila Mahavidyalaya, Kanpur u p. India
Dr. D. P. Rao, DAV College, Kanpur u.p. India
D. Chandan Prasad Srivastava, (Professor) D. V. A. College, Kanpur.u.p. India
Dr. S. S. S. Kushwaha, (Principal) PPN Degree College, Kanpur.u.p. India
Dr. Santosh Kumar, VSSD Degree College, Kanpur. u.p. India
D. Niru Nigam Sikroriya, (Principal) Saraswati Mahila Mahavidyalaya, u p. India
Mr. Pankaj K, Luck., u.p. India

COMMERCE DEPARTMENT

Dr. Shikha Bala Srivastava, Commette Department, DAV College,Kanpur u.p. India
Dr. Arun Upadhayay, Commerce Department, DAV College,Kanpur u.p. India
Dr. Amit Gupta, Commerce Department, DAV College,Kanpur u.p. India
Dr. Pankaj Kishor Shukla, Atmaram Mahavidyalaya, Alapur,(Budaun), UP

ECONOMICS DEPARTMENT

Dr. M. P. Khanna, Economics Department, DAV College,Kanpur u p. India
Dr. Rajesh Nigam, Economics Department, DAV College,Kanpur u.p. India
Education Department, DAV College,Kanpur u p. India
Dr. Trimal Singh, Shri INPG College (Lucknow), DAV College,Kanpur u.p. India
Dr. H. C. Mishra, Education Department, DAV College,Kanpur u.p. India
Dr. Fateh Bahadur Singh Yadav, Education Department,DAV College,Kanpur u p. India
Dr. Ajay Yadav, Education Department, DAV College,Kanpur u p. India

GEOGRAPHY DEPARTMENT

Dr. Ramakant Velma, Geography Department, DAV College,Kanpur u.p. India

HINDI DEPARTMENT

Dr. Madan Lal Gupta, Hindi Department, DAV College,Kanpur u.p. India
Dr. Deeps Shukla, Hindi Department, DAV College,Kanpur u.p. India

HISTORY DEPARTMENT

Dr. Shailendra Kumar, (Managing Editor) KK Degree College (Etawah)
Dr. Anuja Shukla, Dr Harivansh Rai Bachchan Degree College (Unnao)
Dr. Shalini Mishra, Manohara Smriti Mahila Mahavidyalaya Gauri Beghapur (Unnao)